

श्री निर्वाणक्षेत्र पूजन

(पं. दानतरायजी कृत)

(सोरठा)

परम पूज्य चौबीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये।

सिद्धभूमि निश-दीस, मन-वच-तन पूजा करौं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र अवतरत अवतरत संवौष्ट।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत् भवत् वषट्।

(गीता)

शुचि क्षीर-दधि-समनीर निरमल, कनक-झारी में भरौं।

संसार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौं॥

सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलासकों।

पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवासकों॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन, सलिल शीतल विस्तरौं।

भव-ताप कौ सन्ताप मेटो, जोर कर विनती करौं॥

सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलासकों।

पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवासकों॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती-समान अखण्ड तन्दुल, अमल आनन्द धरि तरौं।

औगुन-हरौ गुन करौ हमको, जोर कर विनती करौं॥सम्मेद॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फूल-रास सुवास-वासित, खेद सब मन के हरौं।

दुःख-धाम काम विनाश मेरो, जोर कर विनती करौं॥सम्मेद॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं।

यह भूख-दूखन टार प्रभुजी, जोर कर विनती करौं॥सम्मेद॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक-प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहिं डरौं ।
 संशय-विमोह-विभरम-तम-हर, जोर कर विनती करौं ॥सम्मद. ॥
 ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 शुभ-धूप परम-अनूप पावन, भाव पावन आचरौं ।
 सब करम पुज्ज जलाय दीज्यो, जोर-कर विनती करौं ॥सम्मद. ॥
 ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 बहु फल मँगाय चढ़ाय उत्तम, चार गतिसों निरवरौं ।
 निहचैं मुकति-फल-देहु मोको, जोर कर विनती करौं ॥सम्मद. ॥
 ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 जल गन्ध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।
 'द्यानत' करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं ॥सम्मद. ॥
 ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(सोरठा)

श्रीचौबीस जिनेश, गिरि कैलाशादिक नमों ।
 तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं ॥

(चौपाई १६ मात्रा)

नमों ऋषभ कैलासपहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं ।
 वासुपूज्य चम्पापुर वन्दौं, सन्मति पावापुर अभिनन्दौं ॥
 वन्दौं अजित अजित-पद-दाता, वन्दौं सम्भव भव-दुःख घाता ।
 वन्दौं अभिनन्दन गण-नायक, वन्दौं सुमति सुमति के दायक ॥
 वन्दौं पद्म मुकति-पद्माकर, वन्दौं सुपास आश-पासहर ।
 वन्दौं चन्द्रप्रभ प्रभु चन्दा, वन्दौं सुविधि सुविधि-निधि-कन्दा ॥
 वन्दौं शीतल अघ-तप-शीतल, वन्दौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल ।
 वन्दौं विमल-विमल उपयोगी, वन्दौं अनन्त-अनन्त सुखभोगी ॥

वन्दौ धर्म-धर्म विस्तारा, वन्दौ शान्ति, शान्ति मनधारा ।
वन्दौ कुन्थु, कुन्थु रखवालं, वन्दौ अर अरि हर गुणमालं ॥
वन्दौ मल्लि काम मल चूरन, वन्दौ मुनिसुव्रत व्रत पूरन ।
वन्दौ नमि जिन नमित सुरासुर, वन्दौ पार्श्व-पास भ्रम जगहर ॥
बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भू पर ।
एक बार वन्दै जो कोई, ताहि नरक पशुगति नहिं होई ॥
नरपति नृप सुर शक्र कहावै, तिहुं जग भोग भोगि शिव पावै ।
विघन विनाशन मंगलकारी, गुण-विलास वन्दौं भवतारी ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा ।

(घत्ता)

जो तीरथ जावै, पाप मिटावै, ध्यावै गावै, भगति करै ।
ताको जस कहिये, संपति लहिये, गिरि के गुण को बुध उचरै ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

हे जिन तेरो सुजस उजागर, गावत हैं मुनिजन ज्ञानी ॥टेक॥
दुर्जय मोह महाभट जाने, निज वश कीने हैं जग प्रानी ।
सो तुम ध्यान कृपान पान गहिं, तत् छिन ताकी थिति हानी ॥१॥
सुप्त अनादि अविद्या निद्रा, जिन जन निज सुधि बिसरानी ।
हवै सचेत तिन निज निधि पाई, श्रवण सुनी जब तुम वानी ॥२॥
मंगलमय तू जग में उत्तम, तू ही शरण शिवमग दानी ।
तुम पद सेवा परम औषधि, जन्म-जरा-मृत गद हानि ॥३॥
तुमरे पंचकल्याणक माहीं, त्रिभुवन मोह दशा हानी ।
विष्णु विदाम्बर जिष्णु दिगम्बर, बुध शिव कहि ध्यावत ध्यानी ॥४॥
सर्व दर्व गुण परिजय परिणति, तुम सुबोध में नहिं छानी ।
तातें 'दौल' दास उर आशा, प्रकट करी निज रस सानी ॥५॥